"वैदिक एवं लौकिक साहित्य में श्रीराधा नाम तत्व निरूपण"

"**श्री** राधा" शब्द की व्युत्पत्ति सिद्धयर्थक "राधा" धातु से मानी जाती है "राध्नोति सकलान् कामान तस्माद राधेति कीर्तिता" श्री राधा भगवान श्री कृष्ण की शक्तिरुपा चिन्मयी शक्ति है - उनका स्वरुप श्वेत चम्पक पुष्प के समान है - उन का श्री विग्रह दिव्य चन्द्रमा के समान चमकदार है। रत्नमय आभूषणों से विभूषित ये देवी सदैव बारह वर्ष की अवस्था में अवस्थित रहती हैं - जिस प्रकार दूध में धवलता, अग्नि में दाहकता, पृथ्वी में गन्ध, जल में शीतलता का निवास रहता है उसी तरह श्रीकृष्ण श्रीराधा में निवास करते हैं और श्री राधा श्रीकृष्ण की अभिन्न बन जाती हैं।

यथा क्षीरेषु धावल्यं यथा वन्हौ च दाहिका
भुवि गन्धो जले शैत्यं तथा कृष्णे स्थितिस्तम।

ब्रम्हपुराण के सप्तम अध्याय में "राधाष्टमी ब्रत" का सम्पूर्ण वर्णन प्राप्त होता है - और वहीं पर श्रीराधा के जन्म से संबंधित कथा भी इस प्रकार है :- "कि भादों मास के शुक्लपक्ष की अष्टमी को वृषभानु की यज्ञभूमि में राधा का प्राकाट्य हुआ - यज्ञ के लिये जब राजा वृषभानु भूमि का शोधन कर रहे थे तब उन्हें राधा जी मिलीं और उन्हें लाकर वृषभानु जी ने अपनी पत्नी को दिया पत्नी ने बड़े दुलार से उनका लालन पालन किया - नित्य वृन्दावन ब्रम्हाण्ड के ऊपर स्थित हैं - वहां ब्रम्हसुख तथा ऐश्वर्य की पूर्णता रहती है और वह अव्यय आनन्ददायक लोक है - गोलोक का ऐश्वर्य प्रतिष्ठित है गोकुल में बैकुंठ का वैभव विराजता है - द्वारिका में वह नित्य दिव्य वृन्दावन स्वयं मथुरा मंडल में वर्तमान प्राकृत दिव्यता के रुप में सुशोभित होता यही गोलोक श्रीराधा जी का धाम है - यहीं के माणिक्य सिंहासन पर श्रीराधा जी विराजमान हैं राधा आद्या प्रकृति तथा कृष्ण की वल्लभा हैं दुर्गा आदि त्रिगुणमयी देवियाँ उसकी कला के करोडवें अंश को धारण करती हैं और उनके चरण की धूलि के स्पर्शमात्र से करोड़ों विष्णु उत्पन्न होते हैं -

तत्प्रिया प्रकृतिस्त्वाधा राधिका प्राणवल्लभा
तत्कलाकोटिकोट्यंशा दुर्गाधा स्त्रिगुणात्मिका :
तस्या अड्घ्रिरज : स्पर्शात् कोटि : विष्णु : प्रजायते।

राधा मूल प्रकृति है वे उस प्रकृति की अंशरुपिणी हैं जिनके सिंहासन के आसपास गोपिकायें सेवा में रहती हैं श्रीराधा विद्या तशा अविद्यारुपिणी परा त्रयी शक्तिरुपा माया रुपिणी चिन्मयी देवत्रय की उत्पादिका वृन्दावनेश्वरी हैं -

सृष्टिस्थित्यन्तरुपा या विद्यादविद्या त्रयीपरा
स्वरुपा शक्ति रुपा च मायारुपा च चिन्मयी
वृन्दावनेश्वरी नाम्ना राधा त्राताडनुकारणात् ।।

पद्मपुराण में कहा गया है कि - राधा के समान न कोई स्त्री है और न कृष्ण के समान कोई पुरुष है - **न राधिकासमानारी**
न कृष्णदृश: पुमान् ।।

श्रीमद्देवी भागवत पुराण में - श्रीराधा की उपासना का सम्पूर्ण वृतांत है - श्री राधा उपासना का मंत्र है श्री राधायैस्वाहा - इसमें मायाबीज व्हीं का प्रयोग करके '' व्हीं श्री राधायैस्वाहा '' यदि कहा जाए तो यह श्री राधावाच्छा चिन्तामणि मंत्र बन जाता है। राधा की अर्चना के बिना कृष्ण की अर्चना में फल नहीं मिलता - वैष्ठावविधान में वैष्णवों का यह कर्त्तव्य बताया गया है कि कृष्ण पूजा के पहले राधापूजन आवश्यक है। व्यापक परमात्मास्वरुप कृष्ण राधा के अधीन सर्वदा बने रहते हैं -

कृष्णार्चायां नाधिकारों यतो राधार्चनं बिना।
वैष्णवै : सकलैस्तस्मात् कर्त्तव्यं राधिकार्चनम् ।।

ब्रम्हवैवर्त्तपुराण में राधा के साथ श्री कृष्ण के विवाह का विधिवत वर्णन है। राधा शब्द में रा का अर्थ है विष्णु और धा का अर्थ धात्री अर्थात् माता। राधा को विष्णु की जननी ईश्वरीमूल प्रकृति कहा गया है। मत्स्यपुराण और ब्रम्हसंहिता में ''राधावृन्दावने इति मत्स्यपुराणात'' कहा गया है।

वैदिक साहित्य के अन्तर्गत - राधौपनिषद एवं राधिक तापनीयोउपनिषद में श्री राधाजी का वर्णन प्राप्त होता है - इनमें राधाकृष्ण की परमान्तरंगभूताऽल्हादिनी शक्ति बतलाई गई है। कृष्णेन आराध्यते इति राधा - कृष्णं समाराधयति सदा ''। राधा और रससागर कृष्ण एक होते हुए भी शरीर से दो हो गये हैं। राधा के २८ नाम इसमें बतलाये गये हैं - श्रीकृष्ण का उत्कट प्रेम तथा आदर राधा के निमित्त है - इस उपनिषद में राधा की प्रशंसा में यहाँ तक कहा गया है कि विश्वभर्त्ता श्री कृष्णचन्द्र एकान्त में अत्यन्त प्रेमार्द्र होकर जिनकी पद धूलि अपने मस्तक पर धारण करते हैं - जिनके प्रेम में निमग्न होने पर उनके हाथ से वंशी भी गिर जाती है एवं अपनी बिखरी अलकों का भी उन्हें स्मरण नहीं रहता तथा वे क्रीतदास की तरह जिनके वश में सदा रहते हैं - उन राधिका को हम नमस्कार करते हैं-

यस्या रेणुं पादयोविश्वभर्त्ता
धरते मूर्ध्नि रहसि प्रेमयुक्त:
स्त्रस्तवेणु: कबरीं न स्मरेद्य
तल्लीन: कृष्ण: क्रीतवत्तां नमाम: ।।

इन दोनों उपनिषदों में ''ये मे राधा यश्च कृष्णो रसाब्धिदेहश्चक: क्रीडानाथ द्विधाडभूत इसी तरह से ''सामरहस्य उपनिषद में यही तथ्य उधृत किया गया अनादिरयं पुरुष एक एवास्ति तदेव रुपं द्विधा विधाय समाराधन तत्परोडभूत तस्मात् तां राधा रसिकानन्दां वेदविदों बिदु: ।। वैदिक मंत्रों में टीका नीलकण्ठ ने ''मन्त्रभागवत'' ग्रन्थ में बहुत से मंत्र ऋग्वेद से उदृत किये गये हैं। नीलकंठ के अनुसार ऋग्वेद ३/३३/१२ के मंत्र में श्रीराधा का नाम निर्दिष्ट किया गया है -

अतारिषुर्भरता गव्यत:
समभक्त विप्र: सुमतिं नदीनास्
प्रपिन्वध्वमिषयन्ती सुराधा
आवक्षाणा: पृणध्वं यात शीभस् ।।

प्राय: यह प्रसंग बार -बार उठाया जाता है कि व्यास जी ने भागवत की रचना में राधा का नाम प्रकट नहीं किया - इस विषयपर श्री सनातन गोस्वामी जी की कल्पना है कि जब शुकदेव जी गोपियों के अद्भुत प्रेम की लीला प्रस्तुत कर रहे थे तब उनकी विरहागिन की कणिका से उनका हृदय विकल हो उठा कि वे अपना देहानुसन्धान भूल गये। ऐसी विकलता में यदि ''राधा'' का नाम उनके मुख से बाहर नहीं निकला तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है।

परम रसिक भक्त श्री व्यासदास जी महाराज ने अपने एक पद में इसे स्पष्ट किया है :-

परमधन श्री राधानाम आधार
जाहि स्याम मुरली में टेरत
सुमिरत बारम्बार
जंत्र मंत्र औ वेदतन्त्र में
सबै तार को तार
श्री सुकदेव प्रगट नहीं भाख्यौ
जान सार को सार
कोटिक रुप धरे नदनंदन
तऊ न पायो पार
व्यासदास अब प्रकट बखानत
डारि भार में भार ।।

भागवत का यह श्लोक १०/३०/२४ में श्रीराधा का होना कुछ विद्वान स्वीकार करते हैं :-

अनयाशधितो नूनं भगवान् हरिरीश्वर :
यन्नो विहाय गोविन्द: प्रीतो यामनयदरह: ।।

''विशुद्विरस दीपिका ग्रंथ'' में यह स्वीकार किया गया है कि बाराहतन्त्र के अनुसार भगवान हरि वृन्दावन में ''गोविन्द'' नाम से प्रख्यात होते हैं फलत: आराधना के द्वारा उस गोविन्द को अपने वश में करने वाली गोपी नि:सन्देह वृन्दावनेश्वरी है श्री निम्बार्क मताचार्य टीकाकार श्री शुकदेव ने अपने सिद्धान्त प्रदीप में राधित: पद की व्याख्या में कहा है राधित: का अर्थ है ''राधा से संयुक्त'' अर्थात् कृष्ण के बिहार में राधा ही हेतु भूत है।

श्री राधा का नाम संकेत भारतीय साहित्य में जयदेवकवि के गीत गोविन्द , लीलाशुक विल्वमंगल का कृष्णकर्णामृत काव्य, श्रीधरदास का सदुक्ति कर्णामृत त्रिविकमभट्ट का नलचम्पू, वल्लभदेव

का शिशुपालवध आनन्दवर्धन का ध्वन्यालोक, महाकवि भास का बालचरित, हालकवि की प्राकृत रचना ''गाथा सप्तशती'' आदि। गाथा सप्तशती के एक प्रसंग में कहा गया है-

''त्वं कृष्ण राधिकाया मुख मारुता गोरजोअपनयन
आसामन्यासामपि गोपीनां गौरवं हरदि ''

अर्थात् - हे कृष्ण तुम अपने मुख की हवा से मुंह से फूंक मारकर, राधिका के मुंह में लगे हुए गोरज धूलि को हटा रहे हो इस प्रेम प्रकाशन के द्वारा तुम इन गोपियों का तथा दूसरी गोपियों का गौरव हर रहे हो।

ऋग्वेद में राधस् शब्द का विपुल प्रयोग प्राप्त होता है - जैसे -

सद्चोदय चित्रमर्वांग राध इन्द्र वरेण्यस
असदित ते विभु प्रभु १/९/५
स्त्रोतं राधानां पते गिर्वाहो वीर यस्यते
विभूतिरस्तु सुनृता एवं इदं हयनवोजसा
सुतं राधानां पते पिवा त्वस्य गिर्वण: ।।

आचार्य बल्देव जी की व्याख्या से राध: तथा राधा दोनों की उत्पत्ति ''राधावृदौ'' धातु से है जिसमें आ उपसर्ग जोड़ने पर आराधयति धातु पद बनता है। फलत: इन दोनों शब्दों का समान अर्थ है आराधना अर्चना अथवा अर्चा। राधा वैदिक राध: या राधा का व्यक्तिकरण है। राधा पवित्र तथा पूर्णतम आ राधना की प्रतीक है आराधना की उदात्तता उसके प्रेमपूर्ण होने में है - जिस आराधना या अर्चना में विशुद्ध प्रेम नहीं झलकता जो उदात्त प्रेम के साथ नहीं सम्पन्न की जाती क्या वह कभी सच्ची आराधना की अधिकारिणी होती है इस प्रकार राधा शब्द के साथ प्रेम के प्राचुर्य का भक्ति का विपुलता का भाव की महनीयता का सम्बन्ध कालान्तर में जुटता गया और धीरे धीरे राधा विशाल प्रेम की प्रतिमा के रुप में साहित्य और धर्म में प्रतिष्ठित हो गई -

रास की वे अधिष्ठात्री है - महारास पूरन प्रगट्यो
आनि- आति फूली घर घर ब्रजरानी राधा प्रगटी जानि।

प्रसिद्ध साहित्यकार ''वेताब जी केवलारवी जी'' ने श्री राधा शतक में श्री राधा जी के चरणों की महत्ता में वंदना करते हुए लिखा है :-

सांवरे को धन राधारानी के चरन हैं
हरिमन हरन राधारानी के चरन हैं
ये माना बंधे हैं कन्हैया से सब जन
कन्हैया मगर राधारानी के शरन है
और न भटक तू बेताब सुन ले
तारनं तरन राधारानी के चरन हैं ।।

पता:- **डॉ.राजेशकुमार उपाध्यय ''नार्मदेय''**
श्रीकृष्णार्जुन सदन
श्री राजेन्द्र टॉकीज के पीछे
शहाडोल (म.प्र), ४८४००१